श्री अनार देवी खण्डेलवाल महिला पॉलिटेक्निक
मथुरा
विषय - हिन्दी आशुलिपि
कक्षा - द्वितीय सेमेस्टर
अध्यापक - श्रीमति सुजाता सिंह



## वृत स से आप क्या समझते है

व्यजंन ध्वनि स के लिये आरंभ में एक वृत का प्रयोग किया जाता है। ताकि रेखाएं अधिक स्पष्ट व गतिशीलता से लिखी जा सकें और उन पर स्वर न लगाना पड़े

वृत स एक छोटे वृत के रूप में सभी सरल रेखाओं के साथ बाएं रुख या घड़ी घवने की विपरीत दिशा में लगाया जाता है। जैसे—

सका सज सरासर सब
सटीक

आरम्भ में यह वृत्त केवल व्यजंन "स" प्रकट करता है, जबकि मध्य या अंत में यह श, ष, ज या स की ध्वनि प्रकट करता है। जैसे :—

डोज़ कैस होश घोष जोश

यह वृत दो सरल रेखाओ के बनने वाले कोण के बाहर लगाया जाता है। जैसे :—

चस्का डैस्क पोषक चेष्टा रसिक

किन्तु यदि आरंभ में स से पूर्व कोई वृत आ जाए अथवा अंत में स के बाद कोई स्वर आए तो उस दशा में स वृत नही लगाया

PTO

Scanned with CamScanner

जाता क्योंकि स्वर के लिए स्थान होना आवश्यक है। जैसा :-

आसामी  नाशी
काशी  खुशी

② व्यजंन "ह" से पहले यदि "स" आता हो।

व्यजंन ह से पहले यदि 'स' आ जाए तो वृत्त "स" को 'ह' के साथ मिलाकर लिखा जाता है जैसे :-

सही  सहारा  सहज
सहम

किन्तु यदि 'स' के पहले कोई स्वर आजाए तो स वृत्त के ~~साथ~~ स्थान पर "स" रेखा का प्रयोग किया जाता है और "ह" की दिशा अधोमुखी (downword) हो जाती है।
:- सहाय  असहाय  सहारा  असहरा
साहसिक  असाहसिक

वृत्त 'स' के बाद ल का प्रयोग

यदि किसी रेखा पर लगे वृत्त से के तुरन्त बाद 'ल' व्यजंन आ जाए तो व्यजंन ल को उसी दिशा में लिखा जाता है। जिस दिशा में वृत्त पुरा होता है।

नसल  फसल  काउंसिल
हासिल  मसला  पेंसिल